अध्याय- पाँचवाँ

रांगेय राघव की प्रिय कहानियों का कलापक्ष।

// अ ध्या य - पाँ च वाँ //

-: रांगेय राघव की प्रिय कहानियों का कलापक्ष। :-

१] प्रिय कहानियों की योजना का बोध :-

प्रिय पुस्तक की रेखा के बारे में स्वयं रांगेय राघवजी कहते हैं - " साहित्य का सत्य मूलत : वस्तु का सत्य होता हैं तो उसमें चित्रित मनुष्य का रूप नष्ट हो जाता है, इस रेखा को मैंने सदैव ध्यान में रखा है। [१] उन्होनें सचमुच ही समस्यागत विविध पहलुओं, मुहावरों, शब्दों का आवश्यक तानुसार उपयोग किया है।

उनकी प्रिय कहानियों में योजना होने के कारण वे सब सजीव -सी लगती हैं। उनकी प्रिय कहानियों का आरम्भ, मध्य और अन्त अत्यन्त रोचक, आकर्षक, सरस और कौतूहलपूर्ण बना है। आपने प्रिय कहानी संग्रह की सफाई देते हुए स्वयं लेखक कहते हैं कि - " मुझे तो अब मजा आता है और यों मैंने संग्रह किया है उन रचनाओं का जो मुझे अच्छी इसलिए लगी हैं कि वे अभी तक अपनी जैसी बनी हुई हैं। [२] यहाँ लेखकने अपने अध्ययन के साथ लेखन - कार्य को जोडा होगा, इसलिए उनका कलापक्ष प्रभावशाली बना है, यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता हैं।

२] क था न क :-

१] कुत्ते की दुम और वैतान : नये टेकनीक्स का कथानक :-

कला पक्ष की दृष्टी से यह कहानी प्रसिध्द और प्रिय कहानी है। कथानक " स्वार्थ ", "ह अहं," आदि कारणों से स्पष्ट है। इसमें सुषमा और चंचल पात्रों को लेकर समाज के प्रतिनिधीयों की कलम बोलती हैं।

कहानी में झील, पहाडीपरिवेश का चित्र है। इसमें सुषमा चंचल की विशेष प्रसिध्दि के पीछे दौडती है। यहाँ सुषमा और चंचल में बडा

अजीब - सा उपनापन है। यह लेखक के कलापक्ष का शाश्वत मूल्य है कि - " जब युग का सत्य युग - युग के सत्य से तादात्म्य करता है तब उस कला काजन्म होता है , जो शाश्वत कहलाती है , यानी वह जो कुछ दिन ज्यादा रहती है। [३] यह कहानी नये ही टेकनीक्स से लिखी हुयी है।

२] "पंच परमेश्वर " का कथानक :-

कथानक का प्रारम्भ पात्र - परिचय से शुरू होकर गली के वातावरण के पर चला जाता है। चन्दा की माँ रम्पीने अपना पति मरने पर देवर किया था। इस का गुस्सा कन्हाई को था। एक दिन रम्पी बगल के घर में मर कर पडी थी। कन्हाई उसका बडा बेटा था। उसने अपने हाथ से आग दी। कारज किया। बारह बामन बुलाए गये थे।

चन्दा जब बाईस वर्ष का हो गया तब कन्हाई ने चन्दा की शादी करवा दी। उसी समय चन्दा की बहुने कन्हाई के पैर छुए। चन्दा की गिरस्ती आरंभ हो गई। कन्हाई बगल के घर में रहने लगा। इस प्रकार कहानी, कला की दृष्टी से मध्य में अत्यन्त सुन्दर और रोचक बनी है।

चन्दा मरद मुरुष नहीं यह जानकर उसकी बहुने बाहर कदम रखा। पडोस के लोग चर्चा करते थे। पति पत्नी में पैसों को लेकर संघर्ष चलता था। चन्दा की फूलों जवान होने के कारण से देखकर कन्हाई के मन में कुभावनाएँ आयीं। कन्हाई बिस्तर पर पडकर सोचने लगा - " चंन्दा। फूलो। रात। बिस्तर और.....। [४] कन्हाई का ध्यान फूलों पर केन्द्रित हो गया। चन्दा के प्रति द्वेष हो गया। एक दिन कन्हाई ने अपने मन की बात फूलों को कह दी। एक दिन वह भी कन्हाई के घर जा बैठी।

जब चन्दाने आकर घर खाली देखा तो उसे आश्चर्य लगा। उसने उसे कन्हाई के घर देखा। और चलने के लिए कहा। लेकिन वह नहीं आयी। कन्हाई दुकान मे से आने पर उन दोनों में संघर्ष हो गया। चन्दा ने चौधरी

पंच मुरली को सब मामला बताया। पंचायत की सब जिम्मेदारी स्वीकार ली। लेकिन कन्हाई के पास पैसे होने के कारण उसने चौधरी पंच मुरली को फुसलाया। पंचायत में फुलोने भी कन्हाई के जैसा जवाब दिया। और उसने कहा - " पुरुषार्थहीन पुरुष को कोई अधिकार नहीं कि वह स्त्री को दास बनाकार रखे। [५] इसप्रकार उल्टे चन्दा को ही दण्ड हुआ। इस कथानक में न तो न्याय है, न सत्यनिष्ठा है और न इमानदारी है। यह कहानी यथार्थ के धरातल पर टिकी हुई है। उसके पंच खूब रिश्वत लेते हैं। अन्याय को महत्व देते हैं, धन की आड में न्याय देते है। आखिर मनुष्य ही मनुष्य है और पंच परमेश्वर इस कथानक का ज्वलंत उदाहरण है। यहाँ यह कथानक प्रभावी बन गया है।

३] "प्रवासी " का कथानक :-

कथानक का प्रारम्भ वातावरण की विविध घटनाओं से हुआ है। इस कहानी में दक्षिण भारत के ऐतिहासिक व सामाजिक कलापक्ष का महत्व है। यह एक प्रेम कथा है। इसकी विशेषता यह कि उत्तर और दक्षिण के धार्मिक जीवन से जुडी हुयी कहानी है।

नायक गोपालन दक्षिण में से उत्तर आकर पुजारी के रूप में है। किन्तु उसे युवती याँ मोहक लगती हैं। वह एक दिन रिटायर्ड पोष्ट--मास्टर की पुत्री कोमल को देखकर मुग्ध होता है। वह भी उसकी भावनाओं को जानती हैं। जैसे कि - " किन्तु सुन्दरी कोमल जानती थी कि तपे हुए ताबे के वर्ण का यह पुजारी केवल पत्थर के देवता का उपासक नहीं हैं वरन् उसके भीतर एक हृदय भी है, जिसकी वह एकमात्र अधिश्वरी है। [६]

एक दिन कोमल की शादी किसी जमींदार युवक के साथ पक्की होती है। कोमल के पिता गोपालन से शादी की बात सुनाते है। तब वह पश्चाताप व्यक्त करता है। उसके वृध्द स्वामी उसकी पीडा जानते हैं

और विश्वनाथ अर्चक की कन्या के साथ विवाह करवा देने की सलाह देता है। किन्तु वह उदास होता है। गोपालन प्रारम्भ से ही कोमल की ओर आकृष्ट था। कोमल की शादी पक्की हो जाना उसे असह्य है। यहाँ कहानी का मध्य रोचक बन गया अंश है।

कोमल का विवाह हो गया। गोपालन की व्यथा बढती ही गई। नयनाचारी वृध्द ने अपने बेटे की बहु राजम को कहा कि, अब तू ही माँ है। गोपालन का तू ही ठिकाणा लगा दे। राजम अपने अधिकार पर्व गर्व करती है। यहाँ कथानक को प्रभावोत्पादकता आयी हैं।

अब गोपालन कोमल के प्रति घृणा करता था। ऐसें में ही तातायारीने उसे वेंकटरमन के मरने की बात सूना दी। सारे ब्राम्हणों ने क्रिया कर्म करने से इन्कार किया। तब स्वंय कोमल गोपालन को पूछने आयी उसने बडी देर से जिम्मेदारी स्वीकार ली। क्रिया - कर्म आरम्भ हो गया। फिर सारे ब्राम्हण अपने आप आये। राजम और गोपालन में दक्षिणा को लेकर बातें छिड गयीं। तब राजमने वृध्द पिताजी से यह भी कहा कि गोपालन वेकंटरमन को एकाह [एकादश] में बैठनेवाले है। वृध्द ने वही जिम्मेदारी स्वंय पर ले ली। क्रिया - कर्म चल रहा था। आखिर अचानक गोपालन को बाजू से हटाकर वृध्द एकाह में बैंठ गया। कार्य हो गया। किन्तु राजमने गोपालन और कोमल की बदनामी करना शुरू कर दिया। तीन दिन बाद वृध्द पिता मर गये। कार्य सम्पन्न किया। यहाँ लेखकने कहानी कला को सजीव - सा बनाया है।

कोमल अपनी जमींदारी की जिम्मेदारी गोपालन पर छोडती है। वह भी प्रामाणिकता से काम करता रहता है। किन्तु लोग उन दोनों पर आरोप लगाते रहते हैं। उससे कोमल दुनिया से डरती हैं। वह गोपालन को कहीं सुदूर जाने के लिए कहती है कि - " मुझे डर है कि मै इस अग्नि में भस्म हो जाऊंगी। मैं तुमसे भीख माँगती हूँ, मुझे अकेली तडपने दो, जाओ।

कहीं सुदूर चले जाओ। विवाह करके सुखी जीवन बिताओ। ....जाओगें।[७] इस कथानक में मानव के हृदय को चित्रित किया है। कहानी का संघर्ष और सौन्दर्य को जीवन्त रखता है। इसका आरम्भ, मध्य और अन्त रोचक व सफल है।

४]"घिसटता कम्बल " का कथानक :-

कथानक का प्रारंभ सुबह की घटना को लेकर परिवेश में समाया है। इसमें निम्नमध्यवर्ग का जीवन चित्रित है। इस कलाकृति में गहरा व्यंग्य है, जो समाज के दहलिज को जाकर स्पर्श करता है।

जीवन निबाहते वक्त हर व्यक्ति चिन्ताग्रस्त हो जाता है। जब कुछ सूझता नहीं, तब वह उबकर उपहास करने लगता है। इसप्रकार प्रिय कहनी कला में भी ऐसा ही उपहास है, विवशता है, दुःख है।

समय प्रभात का है। रागिनी सुहाग को शुभ लक्षण समझकर जीवन बिताती है। उसे जीवन कठोर लगता है। वह कच्ची दाल के समान जीवन मानती है कि जो दाल नही पकती। उसे विवाह के और उसके पहले दिन याद आते है। वह स्कूल की मास्टरनियाँ पर प्रेम करना चाहती थी। किन्तु अब वह नहीं मिलेगी।

इतने में विपिन आता है। दोनों एक दूसरे को चाहते है, इसलिए माँ-बाप से दोनों अलग रहते है। यही इस कहानी का व्यंग्य है, जो समाज में आज तक चलता आया है।

नौकरी को लेकर दोनों में बातें चलती हैं। रागिनी उदास होती है। विपिन को भी जीवन क्षुद्र, हीन लगता है। वह व्यक्ति के हृदय का प्यासा बनता हैं। वह अकेला नहीं जी सकता है। उसे प्रेम चाहिए, एक आधार चाहिए। वे दोनों ब्लाऊज को लेकर गप्पे हांकते है। इसप्रकार कथावस्तु में मन के विकृत मल को निकालने का मागदर्शन किया है।

कहानी का मध्य सूचक है। अन्त सरल है। जैसे कि - " जीवन भी तेा इस दाल के ही समान है, उसें फेंक दे उठाकर, किन्तु इतनी सामर्थ्य है काहां।" अर्थात इस कहानी में विविध उपमाओं का चित्रण है।

५] " गूंगे " का कथानक :-

यह कहानी एक गूंगे और बहरे लडके की है। इस का आरम्भ पात्र - परिचय से होता है।

गूंगा जन्म से से ही बहस और गूंगा है। जब वह छोटा था, तभी उसके पिता की मृत्यु हो गयी थी। माँ उसे छोडकर भाग गई थी। उसका पालन- पोषन उसके बुआ - फूफाने किया। वे दोनों उसे बहुत मारते थे। स्वाभिमानी और मनमौजी गूंगेने बुआ का घर छोड दिया। फिर वह यहाँ वहाँ काम करके अपना पेट पालने लगा।

एक दिन गूंगे को माँ का हृदय मिलता है। चमेली उसे अपने यहाँ काम करने के लिए रख लेती है। वह गूंगे के प्रति पुत्रवत स्नेह रखती है। गूंगे के कारण लेाग उसपर हँसते है। गूंगा बिना बताए काम छोड-छोडकर भाग भी जाता है। लेकिन चमेली उसके लिए खाना बचाकर रखती है। वह उसे डांटती व मारती थी, पर गूंगे के प्रति उसकी ममता में अन्तर नहीं आता।

गूंगे का अन्याय के प्रति मूक विरोध चमेली के दिल को छू लेता है। वह अकल का तेज है। मालकिन का अपने बेटे को दंड न देना उसे पक्षपात लगता है। अपने को पीटनेवाले दुष्ट लडकों के प्रति उसका आक्रोश ही उसकी चिल्लाहट बनकर फूट पडता है। उसका दिल अपनी बात कहने के लिए तडप" तडपकर रह जाता है, " और चमेली सोचती है, आज दिन ऐसा कौन है जो गूंगा नहीं है। किस का हृदय समाज, राष्ट्र, धर्म और

व्यक्ति के प्रति विद्वेष से, घृणा से नहीं छटपटाता, किन्तु फिर भी कृत्रिम सुख की छलना अपने जालों में उसे नहीं फांस देती- क्योंकि वह स्नेह चाहता है, समानता चाहता है। [९] इस प्रकार दलितों शोषितों का जो गूंगापन युग - युग से चलता आ रहा है उसके प्रति इस कहानी द्वारा लेखकने संवेदना जगाने का प्रयत्न किया है। कहानी का आरम्भ, मध्य भावपूर्ण है। अन्त में कहानी कला की दृष्टि से पूर्ण है। इस कहानी का यह सत्य है कि व्यक्ति से लेकर राष्ट्रों तक को छूना।

६] " धर्म - संकट " का कथानक :-

यह कहानी मानव के परिवार के निरंतर संघर्ष को प्रस्तुत करती है। एक जमाना था कि इस घर के लोग सुख चैन से रहते थे। किन्तु बाप - बेटे थके - मांदे हो जाने पर क्रम से शराब- भांग का नशा करते हैं, धीरे, धीरे वे आदत के शिकार होते हैं, और बेताब होकर दोनों एक दूसरे को गालियाँ देते हैं। दोनों में संघर्ष भी होता है। दोनों ही अपने थोडेसे सुख के लिए लडते है। इस पति - पुत्र के बीच एक नारी है, जो नाते से ही पति की पत्नी और पुत्र की माँ है। उस नारी के लिए समस्या खडी हो जाती है कि वह किसका पक्ष ले ? वह दोनों को सही दिशा में लाने का प्रयास करती है। किन्तु एक दिन उन दोनों मे जोरों का झगडा होता है। बेटे पर बेहोशी - सी छाई जाती है, तब अन्त में वह बेटे का पक्ष लेती है। पति को भला बुरा कहती है। बेटा होश में आने पर - " और उसने पुचकार कर कहा - उठो बेटा, अब हम इस घर में नहीं रहेंगे। वह दुकान इसी की रहें, देखे कैसे चला लेता है। हम तुम मेहनत करेके पेट पाल लेंगे .....। [१०] यहाँ हरदेव की पत्नी मर्यादा के अन्तर्गत आती है, परन्तु भगवानदास की माँ मर्यादा से सीमाहीन है।

संक्षेप में इसकी शुरुवात, मध्य और अन्तरोचक और सार्थक है।

७]" फुल का जीवन " का कथानक :-

संक्षेप में इसका प्रारम्भ सुन्दर बगीचे के फूल को लेकर होता है। मुख्यत: इसका भेद अमीर और गरीबी को लेकर संस्कृति की ओर संकेत किया है। यह कला - कृति तुलनात्मक है।

सेठ और नीना, जीवन, रामचरण आदि में मजदूरों के हडतालों पर विविधांगी बातें छिड जाती हैं। धनी लोग यह समझते नहीं कि प्रत्येक मनुष्य दोनों जगह एकही है। वह बाह्यता के कारण भिन्न है। वे दूसरों पर अत्याचार करते हैं। और दरिद्रय सब कुछ सहते हैं। इसप्रकार एक और समाज में मजबूरी है, तो दूसरी ओर एकांगी संस्कृति की स्वार्थी वृती है। धीरे - धीरे मजदूर, किसानों के जीवन में परिवर्तन होता है। वे संघर्ष करने के लिए तैयार होते हैं। उसमें एक मजदूर लडके की मृत्यु होती है। उसकी मृत्यु नये जीवन को क्रान्ती लाने के लिए चुनौती देती है। इस प्रकार यह फूल एक प्रतीक है कि जो और किसी के लिए प्रकट होता है। अन्त में यह कला- पक्ष दलित समस्या को खडा करता है। इसप्रकार एक फूल को धनिकों ने कुचला दिया था। जैसे - " मेरे पैरों के पास वह गलीज लाश जो या तोभूख से मरी है, या अत्याचार, से क्यों कि भयानक लू ने फूल को झुलसा दिया है। " कला की दृष्टि से इसका आरम्भ मध्य और अन्त आकर्षक आकर्षक है।

८] " नई जिन्दगी के लिए " का कथानक :-

यह कहानी हृदय में मर्मव्यथा प्रकट करती है। कहानी कला नारी और पुरुष के सामाजिक परिस्थिती की ओर इंगित करती है।

एक विवाहित लडकी अपने बचपन की मर्मकथा पेश करती थी कि उसके माँ-बाप के घर में नौ लडकियाँ ही थीं। लडका नहीं था। इस

कारण उनके घर का वातावरण आंतकित बनता है। पिता पुत्र - प्राप्ति के लिए पूजा - अर्चा करते हैं। जैसे - " बाबूजी दिन- भर पूजा करते। दफ्तर में भी मुंह में हनुमान गुटखा रखते जो बाबा सवांलदास ने उन्हें पुत्र होने के लिए दिया था। [१२]

पति - पत्नी में विवाद होता हैं। समाज की स्त्रियाँ भला बुरा कहती हैं। कुछ दिन और एक लडकी का जन्म होता है।

यहाँ स्त्री-पुरुष पुत्र को ही महत्व देत हैं। यहाँ समाजिक पक्ष में आर्थिक पक्ष, दहेज प्रथा का प्रचलन है। इसमें विषमता है। उसे ही लेखकने " नई जिन्दगी के लिए " में चितारा हैं। यहाँ हर नारी को विचलित करनेवाली संवेदनात्मक शब्द रचना है। यहाँ वास्तव में समानता लाने के लिए बच्चे और बच्ची में फर्क नहीं करना चाहिए।

इस शब्द पूंजी में हिंदू समाजके कठोर हृदय का दर्शन कराया है। इसका सवांग में विकास हुआ है।

९] " गदल " का कथानक :-

गदल हिन्दी - कथा साहित्य की अत्यन्त प्रसिध्द और प्रिय कहानी है। चन्द्रधर शर्मा " गुलेरी " की कहानी " उसने कहा था " को जो सम्मान प्राप्त हुआ, उसी प्रकार का सम्मान गदल को भी प्राप्त हुआ है।

"गदल " राजस्थान के ग्राम - जीवन का चित्र है। गूजर जाति को आपने अलग- से रीति - रिवाज, रुढि तथा परम्पराएँ है।

" गदल " एक सफल तथा सुसंम्पन्न गूजर जाति के परिवार की नारी है। वह विधवा है। पति गुन्ना की मृत्यु के बाद वह अपने देवर डोडी की ओर आकृष्ठ होती है। डोडी मात्र विरक्त है।

देवर डोडी की अनासक्ति से खीजकर गदल अपने जवान लडकों, बहुओं तथा नाती-पोतों को छोडकर लोंहरे जाति के " मौनी " नाम के व्यक्ति के घर जा बैठती है। गदल के इस प्रकार के आचरण से परिवार के सदस्यों को दु:ख होता है। वे भी बिरादरी के अन्य लोगों के समान ही सोचते हैं। उनकी धारणा है कि, गदल ने अधेड उमर में इसप्रकार की हरकत कर सारे गुजरों को नाक कटवा दी है।

गदल का मौनी के घर चले जाना डोडी को असह्य हुआ और उसी रात वह मर गया। डोडी की मृत्यु का समाचार गिरजिग्वारिया द्वारा मौनी के घर ही गदल को मिलता है, वह तुरन्त ही डोडी के घर जाना चाहती है पर मौनी उसे घर में ही बन्द कर देता है। परन्तु वह रात को तिसरे प्रहर में छप्पर का कोना उठाकर सांपिन की भाँति रेंगकर निकल जाती है। निहाल उसे फटकारता है। वह उसे उत्तर देते हुए अपने पति छन्ना की मृत्यु के बाद हुए कारज की त्रुटियों की ओर संकेत करती है। अन्त में डोडी के कारज का विषय छेडती है, वह डोडी के कारज के प्रबन्ध की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर लेती है। धूमधाम से कारज हो, उसमें कानून से अडंगा न खडा हो जाए इसलिए पहले ही दारोगा की रिश्वत देती है। परन्तु मौनी ईर्षावश कस्बे के दारोगा के पास जाकर शिकायत करता है। परिणामत : ऐन दावत के समय ही अचानक पुलिस का सिपाही आकर दावत बन्द करने की सूचना देता है। दावत बन्द करने के लिए निहाल गदल को समझाने की कोशिश करता है। लेकिन वह स्वंय अकेली पुलिस से लोहा लेती है। अन्त में वह पुलिस की गोली से घायल होती है। आत्मा की शांति के लिए वह अपने मरद मुन्ना तथा देवर डोडी के पास जाती है। निष्कर्षत: वह अपने परिवार के सुख, प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा हेतू प्राण न्योछावर कर देती है। मरने से पूर्व हंसते हुए वह दारोगाजी से कहती है - " कारज हो गया दारोगाजी । आत्मा को

शांति मिल गई।" [१३] इस घटना से कर्तव्य निष्ठा एवं उदारता स्पष्ट होती है। गदल कहानी का कथानक, आरम्भ, मध्य अत्यन्त रोचक और कौतूहल पूर्ण है। अन्त में कहानी कला की दृष्टी से गदल - गदल है और गदल ही रहेगी, उसकी कोई जोड नहीं है।

३] सं वा द [कथोपकथन] :-

डॉ. रागेय राघव के प्रिय कला - पक्ष में रोचकता और आकर्षकता का क्षेत्र संवादो में प्रकट है। जो हम दैनिक जीवन में बात-चीत करते है, वैसा ही वास्तविक रूप इन संवादो में प्रकट हुआ है। संवाद निश्चय ही पात्र, प्रसंग एवं परिस्थिति के अनुकूल हैं तथा कथानक की गति विकसित करने में सहाय्यक हैं। छोटे - छोटे संवाद पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करनेवाले हैं। प्रिय संकलित कहानियों के संवादों का सृजन संक्षेप में पेश किया हैं -

१] " कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " में स्नेह आभास है। यह कहानी वास्तव सत्य पर ढिकी है। इस नये टेकनीक्स के संवाद का एक नमूना देखिए -

" सुषमाने पलकों भी उधर दृष्टि नहीं टिकाई। कहा वह देखो बादल उधर मुड गया, चलो रायडिंग करेंगे।

चंचलने सिगरेट सुलगा ली और झील के किनारे की रेलिंग थामकर कहा - आज फिर ?

सुषमा झुंझला उठी। बोली - क्यों ? आज क्या कोई मुसीबत हैं या आपके दिमाग में कोई प्लाट आ रहा है। [१४]

यह संवाद मार्मिक है।

२] " पंच परमेश्वर " संवाद की दृष्टि से बहूत सफल

है। संवादों के कारण इस कहानी का कथानक मार्मिक बना हैं। संवादों की भाषा चढाव- उतार रंग ढंग प्राप्त करती हैं। एक उदाहरण लिजिए -

" चंन्दानेकहा - दादा, नाक कट गई। इज्जत धूल में मिल गई।

चौधरीने विस्मय से कहा - अरे। सो कैसे ?

" बहू तो भैया के जा बैठी। "

चौधरी को झटका लगा। पूछा - सच ? यह कैसे ?[१५]

यह संवाद मर्मस्पर्शी, नाटयपूर्ण है। इसलिए कहानी विकास की चरमसीमा पर पहुंची है।

३] " प्रवासी " का संवाद जहाँ पात्रों के हृदयगत भावों को अभिव्यक्त करते हैं, वहाँ कथानक को भी आगे बढाने में सुहयोग देते हैं। इसका एक ऐतिहासिक महत्त्व होने के कारण कलात्मकता, सजीवता में समस्त जीवन का एक सूत्र से युक्त निम्न योग्य है। जैसे -

" अनुचित सम्बन्ध तो हैं, आयंगार। उसे तुम यों नहीं मिटा सकते। कोमल ने उसके चेहरे पर आँखे गडाकर कहा।

" क्या कह रही हो ?" गोपालन का स्वर कांप गया। " क्यो ? " कोमलने कहा - सम्बन्ध क्या शारीरिक होने से ही अनुचित होता है, मानसिक होने से नहीं ?

" वह तो केवल धारणामात्र होती है", उसने सकपकाकर कहा।[१६] लेखक ने यहाँ संवाद रुपी सौन्दर्य की सृष्टि की है। जहाँ संवाद एक सौन्दर्य को जीवित रखने की अखण्ड लालसा है।

४] " घिसटता कम्बल " का संवाद व्यंग्य से ओतप्रोत है। पात्रों का संवाद सरलता, सफलता से जीवन से सार गर्भित है,

जैसे - " रागिनी दोनों हाथों से उसका मुख अपनी ओर मोड़कर कहती हैं - तो क्या हम लोग कभी भी सुखी नहीं रहेंगे ?

सुख। एक दर्दनाक सपना, जिसके अन्त में जैसे मनुष्य चिल्लाकर बिस्तरे से उठकर भागता है।

विपिन धीरे - से हंसा। उसने हल्की- सी मुस्कराहट से कहा - पगली। सुख और किसे कहते हैं ? रागिनी के मन पर कोई सांत्वना का धडा उँडेल रहा है। [१७]

५] " गूंगे " जैसा सफल, सरस, चतुर, सार्थक और आकर्षक संवाद हिन्दी के प्रिय - साहित्य में कम ही मिलते हैं। यह संवाद कथा - वस्तु को गतिशील बनाने में कुशल है। एक ढाँचा देखिए - - " और चमेली ने इशारा किया - हमारे यहाँ रहेगा ?

गूंगेने स्वीकार तो किया किन्तु हाथ से इशारा किया - क्या देगी ? खाना ?

" हां," चमेलीने सिर हिलाया।

" कुछ पैसे ?"[१८]

उपरोक्त संवाद से गूंगे के मुख से बाल- मनोवैज्ञानिकता की सफल झाँकी उपस्थित हो जाती है।

६] " धर्म - संकट " का संवाद हृदय में भावात्मकता, उपयुक्त पात्रानुकूल स्वाभाविक है। धर्म - संकट एक त्रिकोण है, उसे लेकर संवादों के कारण कथा - वस्तु प्रभावी और सुन्दर बन पडी है। एक घटना देखिए -

" वह चिल्ला उठी - भगवानदास। कपूल। बाप से सामना करता करता है ? उसकी तुझसे एक बात नहीं सुनी जाती ?

भगवानदास ने माँ को पोछे धकेलकर कहा - आज यह नहीं मानेगा। कहूंगा, कहूंगा, फिर कहूंगा। क्या कर लेगा, हां, ले मैं कहता

हूँ, सारी बाखर सूने। आया बडा डरानेवाला, जैसे मैं कोई बच्चा होऊं, शराबी....।

हरदेव का हाथ उठ गया। माँ बीच में जूझ पडी किन्तु दोनों क्रोध से मतवाले हो रहे थे। एक हाथ घूमा। वह छिटककर दूर जा पडी। दोनों लड रहे थे।[१९] यह मार्मिक घटना संवादो के कारण पाठक के हृदय को स्पर्श करती है।

७] " फूल का जीवन " के डॉ. रांगेय राघवजी एक सफल कहानीकार है। कहानी में दलितों की पीडा, दु: ख लेकर कथा विकास के लिए संवाद अत्यन्त सहायक है। जैसे -

" नहीं। " मैने गम्भीरता से कहा - इन सबको निकालकर इतने ही नये मिल सकते हैं। अभी हिन्दुस्तान में ऐसे लोगों की कमी नहीं।

८] " नई जिन्दगी के लिए " में संवाद के द्वारा ही पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रस्तुत होती हैं। कुछ संवादों के प्रसंगो में मनोरंजकता, सरलता, सजीवता, आकर्षकता भी है। ऐसा ही एक संवाद है -

" जब मैं नल पर पानी भरने लगी तो ठकुराईन ने पूछा - क्यों, तेरी माँ के कुछ होनेवाला है ?

मैंने सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया। ठकुराइन झट चुप होती। पूछ बैठी - कितने दिन रहे। मैंने दबी जबान से कहा - जल्दी ही।[२१]

९] "गदल " कहानी का संवाद कलात्मक और अत्यन्त व्यापक हैं। इस संवादों में नाटकीयता और चरित्र चित्रण की विशेषता भी विद्यमान है। जैसे -

" भागा हुआ एक लडका आया।

" दादी । " वह चिल्लाया ।

" क्या है रे ? - गदल ने संशंक होकर देखा ।

" पुलिस हाथियारबन्द होकर आ रही है ।"

निहालने गदल की ओर रहस्य भरी दृष्टिसे ~~देखा~~ देखा ।

गदल ने कहा - पांत उठने में ज्यादा देर नहीं है ।

" लेकिन वे कब मानेंगे ? "

" उन्हें रोकना होगा । "

" उनके पास बन्दूकें हैं । "

" बन्दूकें हमारे पास भी है, निहाल । " गदल ने कहा ।[२२]

इसप्रकार सम्पूर्ण संकलित कृतियाँ कला दृष्टि से सफल, सरस, आकर्षक, रोचक आदि गूनों से परिपूर्ण हैं ।

४] पात्र और चरित्र - चित्रण :-

यहाँ लघु- प्रबन्ध के क्षेत्र पर ध्यान देकर मौलिक पात्रों का संक्षेप में चित्रण करने का प्रयास किया हैं ।

१] " कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " में चंचल और सुषमा के सिवा अन्य पात्र नहीं हैं । इसमें समाज के प्रतिनिधीयों की कलम बोलती हैं । लेखकने वास्तव का सत्य और सत्या का वास्तव दोनों बातों के दर्शन कराये हैं ।

२] " पंच परमेश्वर " - इन पात्रों की प्रतिनिधी चरित्र में यथार्थवादी विशिष्टताओं के पात्र आते हैं । लेखकने स्त्री- पुरुष पात्रों को चुनाया हैं । पात्र हैं - चन्दा, फूलों, कन्हाई और चौधरी पंच मुरली आदि । चन्दा के प्रति अन्याय है । चन्दा मानसिक तनावों से घिरा हैं । यहाँ लेखक सम्पूर्ण सफल है ।

३] " प्रवासी " - के पात्र धर्म को लेकर चलते हैं । इस कहानी के पात्र सौन्दर्य को सजीव रखने के लिए सदैव लालसा रखते हैं । इसमें मुख्य हैं - गोपालन, उसके पिता और कोमल । इन पात्रों की

दो कोटियाँ हैं - एक साधारण चरित्र और दूसरा प्रतिनिधी चरित्र। डॉ. रांगेय राघवजीने दोनों की कोटियों के पात्रों का चित्रण बडी ही सफलता के साथ किया है।

४] " घिसटता कम्बल " में पात्र बहुत कम हैं। फिर भी लेखकने पात्र - चित्रण की सृष्टि तैयार की है। पात्रों के कारण सवांद ,कथानक सुन्दर बना है। इस कहानी का व्यंग पात्र - चित्रण करने के लिए पात्रों को लाभान्वित है।

५] - " गूंगे " कहानी के पात्र बडे ही सीमित हैं - गूंगा माँ की भावना रखनेवाली चमेली और अन्य विविध पात्र। लेखकने पात्रों का नियोजन बडे सुन्दर ढंग से किया है। पात्रों की मनोवृति, उनकी प्रतिस्पर्धा, सरलता और जिज्ञासा आदि को बडे सुन्दर ढंग से अंकित किया है। गूंगे और चमेली का चित्रण भी राघवजीने सुन्दर ढंग से किया है। इस चित्रण में यथार्थ और मनोवैज्ञानीकिता दोनों ही का बडा ही सुन्दर समन्वय है।

६] " धर्म - संकट " के पात्र चित्रण में मानव के परिवार की सार्वकालिक मुलभूत समस्या को पेश किया है। लेखक की कला- दृष्टिने पात्रों के साथ - साथ कथानक को भी विकसित बनाया है। यहाँ तीन पात्रों के त्रिकोण के कारण यह कहानी अधिक प्रभावशाली है।

७] " फुल का जीवन " के लेखकने अपनी कहानियों में पात्रों का चयन भी जीवन के विविध पक्षों से किया है। उन्होंने पात्रों में अमीर और गरीब का भेद करके पात्र चित्रण को प्रभावी बनाया है। दरिद्र पात्रों की मजबूरी को अन्त में साहसी घोषित किया है। उनके आचरण तथा वार्तालाप से उनका चरित्र हमारे लिए पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है।

८] " नई जिन्दगी के लिए " लेखकने स्त्री-पुरुष पात्रों को लेकर बच्ची और बच्चे में भेद करनेवाली परम्परा का चित्र खिंचा है। तीन बच्चेवाली स्त्री के जीवन की सामाजिक परिस्थिती का हाल पेश करती है। वह आर्थिक पक्ष को दुहराती है। हिन्दू समाज परम्परा रीति - रिवाज, रहन-सहन आदि की ओर इंगित करती है। इसमें पात्रों के मन की तडपन, विषमता पात्रानुकूल स्पष्ट है। लेखक यहाँ सफल रहे है।

९] " गदल " की नायिका गदल है। गदल एक ऐसी स्त्री है, जो एक ही समय पर दो परिवार से समान्वित है। फिर भी, एक बात स्पष्ट है कि, मौनी के परिवार की अपेक्षा गुन्ना - डोडी के परिवार से वह अधिक मात्रा में प्रतिबध्द है। गदल स्पष्टवादी, दृढ, फुर्तीली, धैर्यवान ममतालु माँ है। वह रीति - रिवाज, रुढि, तथा परम्पराओं को कानुन की अपेक्षा श्रेष्ठ मानती है। गदल वस्तुत: देवर डोडी से प्रेम करती थी किन्तु सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा के लिए जब उसके देवरने उसको उपेक्षा की तो वह दूसरे के साथ चली गई। अन्त में आपने प्रेम को सच्चा प्रमाणित किया। और सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा करते हुए बलि हो गई। उसके उत्सर्ग की यह कथा कलात्मक ढंग से लिखी गई है।

५] वातावरण - चित्रण :-

डॉ. रांगेय राघव की प्रिय कला - कृति मुझे सोद्देश्य लगती है , क्योंकि उसमें सौद्देश्यता ही दिखाई देती है, न की अन्य इसमें वातावरण का चित्र सुन्दर ढंग से हुआ है।

१] " कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " में

सौद्देश्य वातावरण का सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। वस्तुत : इसमें पहाडी, बंगलों, झील और प्लॉट के वातावरण का समन्वय हुआ है। इसीकारण यह कला परिवेश यथार्थ के धरातल पर टिका हैं। नमूना देखिए " मैले फटे कपडे पहने पहाडी कुली जिन्दगी की भयानक कशमकश में दुहरे होकर पीठ पर बोझ ढाते पहाड पर बंगलों की ओर चढ रहे थे।[23] इसमें स्थानीय रंग के साथ पात्र - चित्रण करना लेखक की अपनी विशेषता है। उनकी कलाकृति में स्थानीय वातावरण की विशेषता का बडा ही मार्मिक और प्रभावशाली यथार्थ रूप सामने आता है।

२] "पंचपरमेश्वर" कहानी पात्र परिचय के साथ अंधेरे समय को लेकर गली के वातावरण तक चलती है। मात्र गांव नहीं, शहर का वातावरण हैं। इसके अनेक रंग - ढंग दिखाने में लेखक सफल रहें हैं।

३] " प्रवासी " के बरसात का वातावरण फूलवाडी तक व्यापता है। लेखकने पवित्र तिरुपथीमल्य के श्रीनिवास के मन्दिर, धर्मशाला मदरसा, तिरनाचूर अर्थात दक्षिणी विभाग का विविधांगी दर्शन कराया है। पृथ्वी से आकाश तक से वातावरण पर लेखक का ध्यान रहा है। इस प्रकार पूरी काहनी सुन्दर बनानें में लेखकने चार चाँद लगा दिये हैं।

४] " घिसटता कम्बल " में प्रभात का समय है। वह सरल मोहल्ले के वातावरण को दुहराता है। उस वातावरण में पात्रों का मानसिक तनाव समाया है। लेखकने वस्तु संकेत में जीवन का मूल्य दाल के समान माना है, कि जो दाल नहीं पकती। इस प्रकार दु:खी संसार का समावेश काली काली रात के वातावरण में होता है।

५] " गूंगे " यह कहानी पाठकों के मन में करुणा की भावना का वातावरण प्रकट तो करती है, साथ ही साथ बाह्य परिवेश को भी। इस कहानी के प्रसंग - घटना को लेकर लेखकने वातावरण को

सजीव- सा बनाया है। इस कारण उनकी कहानी में मार्मिक और प्रभावशाली रूप सामने आया है।

६] " धर्म - संकट " में दिन रात के तनाव पूर्ण वातावरण को पेश किया गया है। वातावरण को प्रभावशाली बनाने में उनकी भाषा - शैली की भी सहाय्यता मिली है। कथानक को प्रियता बढाने के लिए वातावरण का बडा ही सहयोग रहा है। इसप्रकार लेखक की दृष्टि घटित घटनाओं को वातावरण में समाविष्ट करती है।

७] " फूल का जीवन " जिस प्रकार वातावरण का रंग ढंग बदलता है, उसी प्रकार जीवन की मान्यताएँ भी बदलीती रहती है। इसमें लडके की मृत्यु पूरे समाज को आंदोलित करके वातावरण का चित्र सचेतना में परिवर्तीत कर देती है। इससे कहानी अधिक मार्मिक प्रभावी और जीवन्त लगती है।

८] " नई जिन्दगी के लिए " के पन्द्रह वर्षीय स्त्री को चोट लगनेवाले प्रसंग में वातावरण द्वारा बनाये गये रूप को पूरी तौर पर साकार कर दिया गया है। मुहल्ले के स्त्री-पुरुषों की बातचीत से वातावरण निर्मित हुआ है। यहाँ लडकी की छवी एक नई चेतना है, जो सामाजिक, परिस्थिती, को लेकर वातावरण को बदला हुआ पाता है।

९] " गदल " यहाँ वातावरण को यथार्थ का रंग देने में डॉ रांगेय राघवने कमाल कर दिया है। उन्होंने व्यक्ति और वातावरण का सरल चित्र चितारा है। इस कहानी में गांव का यथार्थ परिवेश, रीति- रिवाज और आचार व्यवहार का जो यथार्थ चित्रण हुआ है, वह कहानी के प्रभाव को कई गुना बढाता है। यह कहानी किसी एक परिवार की न होकर देश के शोषित परिवारों की है। यह वातावरण समय के अनुसार पूर्ण सफल है।

६] ** शी र्ष क **
======

संकलित प्रिय कहानियों के शीर्षक बहुत ही अर्थपूर्ण हैं।

१]"कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " यह रांगेय राघव की प्रिय कहानी का शीर्षक बडा ही मौलिक और कलात्मक है। यह कहानी लेखक ने नये टेकनीक्स से लिखी है। इसमें एक निरालापन है जिसके कारण सम्पूर्ण कहानी के प्रति सहज आकर्षन का भाव बन जाता है।

२] " पंच परमेश्वर " यह शीर्षक बहुत ही व्यंग्यात्मक है। कहानी का मुख्य पात्र " चौधरी पंच मुरली " की चारित्रिक विशेषताएँ इस शीर्षक में अन्तर्भूत हो गयी है। शीर्षक सम्पूर्ण कहानी के कथानक और पात्रों का प्रतिनिधित्व करता है।

३] " प्रवासी " शीर्षक छोटा है। लेकिन सम्पूर्ण मानव जीवन का बोध होता है। नायक गोपालन, उसके पिता तथा कोमल के जीवन्त चित्रण का सम्बन्ध शीर्षक से है। शीर्षक देखते ही पाठकों को कहानी पढने की इच्छा होती है।

४] " घिसटता कम्बल " शीर्षक अत्यन्त सार्थक है। शीर्षक पढते ही उससे दु:ख , दर्द स्पष्ट होता है। इस शीर्षक के कथानक के पात्रों के कारण इसका व्यंग्य प्रभावी बन पडा है। इस कारण यह शीर्षक अत्यन्त योग्य है।

५] " गूंगे " कहानी एक गूंगे लडके की है। गूंगे शीर्षक सम्पूर्ण कहानी के कथानक और पात्रों का प्रतिनिधीत्व करता है, जिसके कारण पाठकों के भीतरीहृदय में करुणा की भावना जागृत होती है।

६] " धर्म - संकट " शीर्षक बडा ही मौलिक और कलात्मक है। इसमें एक निरालापण है, जिसके कारण कहानी के प्रति सहज आकर्षन का भाव बन जाता है।

७] " फूल का जीवन " शीर्षक पात्र को लेकर दलित समस्या का प्रतीक बन पडा है। कहानीकार के लिए कहानी का नामकरण विविधांगी योग्य है।

८] "नई जिन्दगी के लिए " शीर्षक देखते ही कहानी का स्वरूप पाठकों के सामने स्पष्ट होता है। इसमें बच्ची और बच्चे का भेद " शीर्षक " से स्पष्ट होता है। लेखक की इसमें कला - कौशल्यता स्पष्ट है।

९] " गदल " - गदल की कहानी की नायिका का नाम " गदल " है। अत: शीर्षक का सीधा सम्बन्ध प्रमुख पात्र से जुडा है। साथ ही ,गदल का अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व पाठक के सम्मुख साकार हो जाता है। अत : गदल शीर्षक सार्थक है।

७] भाषा - शैली :-

मैंने लघु- प्रबन्ध की दृष्टि से रांगेय राघवजी की पुस्तक " मेरी प्रिय कहानियाँ " की भाषा- शैली संक्षेप में निम्नानुसार स्पष्ट कर दी जाती है।

प्रिय कहानी साहित्य में लेखकेने भाषा - शैली में विशेष सजगता रखी है। उनकी भाषा शुध्द सजीव एवं प्रवाहमयी है। शब्द चयन उपयुक्त है। भाषा में चित्राक्षमता का गुण है। शैली रोचक है। शैली प्रभावोत्पादक है। संवादो के वाक्य छोटे छोटे व प्रभावशाली है।

आलोच्य कहानियों की भाषा सरल है। कहीं कहीं भाषा बडी चुटिली हो गई है। हास्य और व्यंग्य के प्रयोग मे उनकी भाषा में

चार चाँद लगा दिये हैं। उनकी कहानियों में ऐतिहासिक शैली, प्रतिका--त्मक शैली, चिन्तन शैली, तुलनात्मक शैली आदि अन्य रूपों के दर्शन होते है।

विविध भाषाओं के शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। जैसे - "लॉट ", [२४] " रिप्रेजन्ट ", [२५] " प्रोफेसर " [२६], अंग्रेजी शब्द, देवता और पुजारिन, [२७] " गूंगा "[२८], " मरद " [२९] और कुछ मुहावरे -"शहंशाह हो जाना "[३०] रोंगटे खडे हो जाना "[३१] आँखें फाड-फाडकर देखना," [३२] "घुटने टूटना "[३३] ऐसे प्रयोग किये गये हैं।

अधिक तर प्राकृतिक सौन्दर्य चित्रण में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। कला - शिल्पी और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से राघवजी का स्थान महत्वपूर्ण है। इस प्रकार प्रस्तुत प्रिय कहानी संकलन प्रिय आकर्षक प्रभावशाली, सजीव व सफल हुआ है।

८] उद्देश्य :-

डॉ. रांगेय राघवजी की संकलित कहानियों में उद्देश का विशेष महत्व है। यथार्थ के धरातल पर प्रतिष्ठित होने के साथ - साथ उनकी कहानियाँ आदर्श की ओर आगे बढती हुई दिखाई देती हैं।

१]"कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " कहानी का यह उद्देश है कि अहं और स्वार्थ से जीवन सुखदायी बन ही नहीं सकता

२] " पंच परमेश्वर " में वर्ग विषमता का चित्र कथानक को आगे ले जाता हैं। इसका पंच रिश्वत लेकर अन्याय को ही महत्व देता है। लेखकने इसमें मानवता के व्यापक चित्र का उद्देश सामने रखकर वर्ग - विषमता को प्रस्तुत किया है।

३] " प्रवासी " की ऐतिहासिक शैली है। इसका उद्देश दक्षिण के सामाजिक जीवन का चित्रण तथा उत्तर और दक्षिण के धार्मिक जीवन का चित्रण करना है। नये नये रास्तों को खोजने का उद्देश हैं। इससे कहानी समस्या हेतूपूर्ण बनी है।

४] लेखक " घिसटता कम्बल " में जीवन की विवशता गूंथने का उद्देश यह है कि जीवन कैसा भी हो, निबाहना ही चाहिए। यही इसका शाश्वत सत्य है कि - प्रेम ही जीवन का एक मात्र आधार है। इसमें कचोटता व्यंग्य होने के कारण मनोरंजन कहीं नही दिखाई देता है।

५] " गूंगे " के चित्रणद्वारा लेखक का उद्देश समाज के उस वर्ग की स्थिति बताना है, जिसकी दशा इस गूंगे लडके के जैसी है। इस प्रकार दलितों - शोषितों का जो गूंगापन युग - युग से चलता आ रहा है, उसके प्रति इस कहानी द्वारा लेखकने संवेदना जगाने का प्रयत्न किया है।

६] " धर्म - संकट " इस कहानी का उद्देश तनावपूर्ण स्थिती का ज्ञान कराना है। यह तनाव पारिवारिक विघटन के साथ ही साथ धर्म- संकट विघटन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। लेखक की यह कहानी मानव के परिवार की मूलभूत समस्या को स्पष्ट करती रहती है, कि जो सार्वकालिक है।

७] " फूल का जीवन " कहानो के बारे में लेखक का उद्देश रहा है कि दलितों में विद्रोही शक्ति का निर्माण करना जो फूल का प्रतीक बनकर अन्त में नयें जीवन को लाने का उपदेश करता है।

८] " नई जिन्दगी के लिए " में राधवजीने उद्देश्य कथन किया है कि, स्त्री के जन्म को लेकर उसकी क्रूर विंडबना का चित्रण

करना है। बच्ची और बच्चे का भेद स्पष्ट करना यही उद्देश है। लेखक अपनी इस कृति द्वारा सामाजिक परतंत्रता का भेद दिखाने में सफल हुआ है।

९] " गदल " इस डॉ रांगेय राघवजी की कहानी में भी उद्देश का विशेष स्थान है। " गदल " राजस्थान के ग्रामजीवन का चित्र है उद्देश - विशेष यह कि - गुजर जाति की अपनी अलगसी रीति- रिवाज, रूढि तथा परम्पराएँ हैं। " गदल " प्रमुख नारी पात्रके के बहुत से विरोधी भावों को लेखक सफलता से प्रकट कर सका है।

इस प्रकार रांगेय राघव जी की प्रिय कहानियों का कलापक्ष उत्कृष्ट है।

****

// अ ध्या य - पाँ च वा //

-: स न्द र्भ ग्र न्थ - सू ची :-

क्रम	ग्रन्थ का नाम	पृष्ठ संख्या
१]	मेरी प्रिय कहानियाँ - रागेय राघव के आधार पर...	पृ॰ २८
२]	वही,	पृ॰ ७७ ७
३]	वही,	पृ॰ ११
४]	वही,	पृ॰ ३७
५]	वही,	पृ॰ ४६
६]	वही,	पृ॰ ५२
७]	वही,	पृ॰ ७५
८]	वही,	पृ॰ ८३
९]	वही,	पृ॰ ९१
१०]	वही,	पृ॰ १०२
११]	वही,	पृ॰ ११५
१२]	वही,	पृ॰ ११९
१३]	वही,	पृ॰ १४१
१४]	वही,	पृ॰ १३
१५]	वही,	पृ॰ ४२
१६]	वही,	पृ॰ ७३
१७]	वही,	पृ॰ ८२

क्रम	ग्रन्थ का नाम	पृ॰ संख्या
१८]	वही,	पृ॰ ८७
१९]	वही,	पृ॰ १०१
२०]	वही,	पृ॰ ११३
२१]	वही,	पृ॰ ११८
२२]	वही,	पृ॰ १३९
२३]	वही,	पृ॰ १३
२४]	वही,	पृ॰ १३
२५]	वही,	पृ॰ १६
२६]	वही,	पृ॰ ३२
२७]	वही,	पृ॰ ८१
२८]	वही,	पृ॰ ९१
२९]	वही,	पृ॰ १२९
३०]	वही,	पृ॰ ९५
३१]	वही,	पृ॰ १४०
३२]	वही,	पृ॰ १०८
३३]	वही,	पृ॰ १२०

****